ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
24, AKBAR ROAD, NEW DELHI
COMMUNICATION DEPARTMENT

Highlights of Media Bite **10 July, 2020**

Shri Randeep Singh Surjewala, In-Charge, Communication Deptt, AICC addressed the media via video conferencing today.

श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि एक अति महत्वपूर्ण विषय को लेकर हम आपके बीच में उपस्थित हैं।

भाजपा शासन में 'उत्तर प्रदेश' अब 'अपराध प्रदेश' बन गया है। संगठित अपराध, नाज़ायज़ हथियार, हत्या, बलात्कार, डकैती, अपहरण, महिला अपराध इनका चारों ओर बोलबाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि कानून व्यवस्था उत्तर प्रदेश में अपराधियों की 'दासी' और अपराधों की 'बंधक' बन गई है।

अपराध के लगभग हर पायदान पर उत्तर प्रदेश पहले नंबर पर है (NCRB) - चाहे पूरे देश के अवैध हथियारों के 57 प्रतिशत मामले अकेले उत्तर प्रदेश में हों (हर घंटे 26 मामले), चाहे महिला अपराधों के 59,445 मामलें के साथ उत्तर प्रदेश पहले पायदान पर हो (समेत रोज 12 बलात्कारों के), या फिर गुंडाराज और संगठित अपराध की चौतरफा आवाज।

जिस प्रकार से 3 जुलाई, 2020 को यूपी पुलिस के एक डीएसपी सहित आठ जवानों की हत्या हुई, उसने पूरे देश के रोंगटे खड़े कर दिए, आदित्यनाथ सरकार में गुंडाराज के बोलबाले को उजागर कर दिया।

इस गोलाबारी और हत्याकांड का आरोपी विकास दुबे बड़े आराम से उत्तर प्रदेश पुलिस को चकमा दे फरार हो गया। फिर हरियाणा के फरीदाबाद से होते हुए 1,000 किलोमीटर दूर उज्जैन (मध्यप्रदेश) तक सड़क मार्ग से पहुंच गया। पर न कोई रोक टोक हुई, न शिनाख्त और न धड़पकड़। यह इसके बावजूद कि हर टेलीविज़न चैनल और अखबार के पन्नों पर विकास दुबे की फोटो दिखाई जा रही थी व छप रही थी। फिर अपनी मर्जी से चिल्ला चिल्लाकर, शिनाख्त कर उज्जैन के महाकाल मंदिर में गिरफ्तारी दे दी और आज विकास दुबे की पुलिस एनकाउंटर में मारे जाने की खबर भी आ गई।

पर विकास दुबे तो संगठित अपराध का एक मोहरा मात्र था। उस संगठित अपराध के सरगना असल में हैं कौन? विकास दुबे के एनकाउंटर के बाद अनेकों सवाल सार्वजनिक जेहन में खड़े हो गए हैं, जिनका जवाब आदित्य नाथ सरकार को देना होगा:-

1. क्या विकास दुबे सफेदपोशों और शासन में बैठे लोगों का राजदार था? क्या उसे सत्ता-शासन में बैठे व्यक्तियों का संरक्षण था?

2. विकास दुबे के पास वो क्या राज थे, जो सत्ता-शासन से गठजोड़ को उजागर करते?

3. विकास दुबे का नाम प्रदेश के 25 मोस्ट वांटेड अपराधियों में शामिल क्यों नहीं किया गया था?

4. क्या विकास दुबे का एनकाउंटर अपने आप में कई सवाल नहीं खड़े कर गया?

(I) अगर उसे भागना ही था, तो फिर उज्जैन, मध्यप्रदेश में तथाकथित सरेंडर क्यों किया?

(II) एनकाउंटर से पहले मीडिया के साथी, जो एसटीएफ की गाड़ियों के साथ चल रहे थे, उन सबको क्यों रोक दिया गया?

(III) पहले कहा गया कि अपराध की संगीनता को देखते हुए विकास दुबे को चार्टर प्लेन में लाएंगे, फिर यह फैसला क्यों बदल दिया गया?

(IV) पहले विकास दुबे को एसटीएफ सफारी गाड़ी में देखा, तो फिर उसे महिंद्रा टीयूवी 300 में कब और कैसे शिफ्ट किया गया?

(V) विकास दुबे की टाँग में लोहे की रॉड होने के कारण वह लंगड़ाकर चलता था, तो वो यकायक भाग कैसे गया?

(VI) अगर अपराधी विकास दुबे भाग रहा था, तो फिर पुलिस की गोली पीठ में लगने की बजाय छाती में कैसे लगी?

(VII) मौके पर मीडियाकर्मियों को गाड़ी के एक्सीडेंट का कोई स्किड मार्क क्यों नहीं मिला और दिखा?

(VIII) क्या यह सही है कि पहले मीडिया को एक्सीडेंट बताया गया और फिर अस्पताल में आकर क्या ये असल में विकास दुबे के एनकाउंटर की बजाए सफेद पोशों और आला अफसरों के राज दबाने के लिए सच का एनकाउंटर है?

मैं फिर पूछता हूं, क्या ये एक अपराधी विकास दुबे के एनकाउंटर की बजाए सफेद पोशों और राजनैतिक व्यक्तियों और आला अफसरों से उनके राज को दबाने के लिए सच का एनकाउंटर है? तो ऐसे में विकास दुबे जो संगठित अपराध का मोहरा था, पर सरगना कोई और है, उन सरगना के चेहरे उजागर हों, हमारे 8 बहादुर पुलिस कर्मियों को न्याय कैसे मिलेगा?

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मांग है और कांग्रेस की महासचिव श्रीमती प्रियंका गांधी जी ने थोडी देर पहले सार्वजनिक तौर से ये मांग रखी है कि विकास दुबे के सरगनाओं को बेनकाब कर ही 8 शहीद पुलिस कर्मियों और उनके परिवारों को न्याय मिल सकता है तथा उत्तर प्रदेश में जो अपराध प्रदेश बन गया है, संगठित अपराध पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

आदरणीय आदित्यनाथ जी संवैधानिक मर्यादाओं की आतिशबाजी आज हुई है। मैं फिर दोहराता हूं, आज संवैधानिक मर्यादाओं की आतिशबाजी हुई है और कानून व्यवस्था का होलिका दहन हुआ है। आज जिम्मेदारी आप पर है। इसलिए हमारी मांग है कि विकास दुबे एनकाउंटर के साथ-साछ संगठित अपराध विकास दुबे सफेद पोशों, राजनेताओं, चोला धारियों, आला अफसरों और सब वो लोग जो इस संगठित अपराध के राज से जुड़े हैं, उन्हें बेनकाब करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के एक

सीटिंग जज से इस पूरे मामले की जांच हो, समेत उन सारे राजदारों के, जो इस राज को दफन करने में लगे हैं। यह मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ जी व देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह के लिए भी कसौटी की घड़ी है कि क्या वो सफेद पोशों व शासन में बैठे लोगों के अपराधियों के साथ गठजोड़ को उजागर करने की हिम्मत दिखाएंगे? यही राजधर्म के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का इम्तिहान भी है, यही राजधर्म की प्रति आदित्यनाथ जी और देश के गृहमंत्री अमित शाह जी की प्रतिबद्धता का इम्तिहान भी है।

On a question about criminalization of politics, Shri Surjewala said- Absolutely, I think, Aaj Tak and India Today has raised an extremely relevant question about criminalization of politics and let me remind you and the nation that the largest number of criminals, who are elected and are given tickets are by the ruling BJP, that is the data that has been released in public domain by independent agencies.

It raises a question on the commitment of Prime Minister Shri Narendra Modi to clean the political system based on which he came to power. Encounter of Vikas Dubey also raises a question of a serious nexus between organized crime, between those enjoying political power and between those who are sitting on the highest echelons of law and order machinery.

How and when and in what fashion will this nexus be proved, will be found, will be revealed and will be punished, is a question that the Home Minister of India, Shri Amit Shah and Chief Minister of UP Shri Adityanath needs to answer to people of UP and the country.

Uttar Pradesh has become synonymous with 'Gundaraj' and organized crime and crimes of all nature including crime against women, children and the aged persons under the UP Government, under BJP and the encounter as also the suspicion around it and the manner and fashion in which a criminal like Vikas Dubey was permitted to roam around free, unchecked and unhindered in UP, murdering 8 of our police officers and policemen, itself raises a question on the commitment of Adityanath Government to control organized crime and the 'Mafia' and the 'Gundaraj' and the four questions that we have put in public domain warrant an answer:-

1. Who are the people sitting in the echelons of power, who were protecting criminals like Vikas Dubey? What is the connection of Vikas Dubey, what are the secrets or the beans that he was about to spill of those sitting in the echelons of power that an encounter of this nature took place?
2. Would the arrest of Vikas Dubey and consequent statement that he would have made before magistrate, spill the beans of deep rooted nexus between organized crime on one hand and between officers and politician in power on the other hand in UP?

3. Why was a criminal like Vikas Dubey not put in the list of 25 most wanted criminals in UP?
4. Is it not correct that this encounter of Vikas Dubey raises more questions than the answers it gives?

   For an example:-

   i. If he had to run away, why did he go and pronounce himself, identified himself and surrender himself in Ujjain, Madhya Pradesh?
   ii. Why were the media persons travelling with the STF car-cades stopped and not permitted to go forward just before the encounter?
   iii. Earlier it was decided that considering the severity of the crime, Vikas Dubey would be brought by chartered plane, why was the decision changed at the last minute to bring him by road?
   iv. Vikas Dubey was seen to be travelling in a safari car of the UPSTF, then how and under what circumstances was he shifted to a Mahindra TUV300?
   v. It is said that Vikas Dubey had an iron rod put in his leg and could not run properly or even walk properly, used to walk with a limp, then how did he escape and run away from the custody of UPSTF?
   vi. If the criminal Vikas dubey was running away, how was he not shot in the back and instead he was shot in his chest by the UPSTF?
   vii. Why was no skid mark of an accident found by the media personnel, who reached the spot minutes after the so called encounter?
   viii. Is it true that earlier media friends were told that it is an accident and only when everybody reached the hospital, the media was told, No, it is an encounter because he was escaping?
   ix. It is said that it had rained or was raining and there was lot of mud and slush, then why was the dead body of Vikas Dubey as shown in the media pictures when brought to the hospital didn't contain a speck of any mud or slush? What is this entire conspiracy?

I think, the onus lies upon the Chief Minister Shri Adityanath as also the India's Home Minister Shri Amit Shah to come forward and answer these questions instead of burying it under a Non-press-conference Press Conference, where the police officers did not even bother to take a single question on the encounter and Indian National Congress, therefore, demands that the unholy nexus of organized crime and the ilk of Vikas Dubey with those sitting in the echelons of power be proved by a sitting Supreme Court judge.

विकास दुबे एनकाउंटर के संदर्भ में पूछे एक प्रश्न के उत्तर में श्री सुरजेवाला ने कहा कि विकास दुबे जैसे व्यक्ति को जिसने 8 पुलिस कर्मियों की हत्या की थी, मुझे व्यक्तिगत तौर से विश्वास है कि कानून उसको फांसी से कम की सजा नहीं देता। यही इस देश का कानून और संविधान है, तो ऐसे में सवाल खड़ा हो जाता है कि विकास दुबे के जिससे संबंध थे, जो सत्ता में बैठे सत्ताधारी, सफेद पोश या आला अफसर थे, उनकी सच्चाई भी सामने आती और उनको भी सजा मिलती। ऐसे में एनकाउंटर अपने आप में सवाल खड़े कर देता है। क्या 21 वीं सदी का भारत अब मध्यकालीन परंपराओं से चलेगा? सवाल ये भी है। सवाल ये भी है कि संवैधानिक मर्यादाओं की दिन प्रतिदिन आतिशबाजी हो जाएगी? सवाल ये भी है कि क्या कानून व्यवस्था का होलिका दहन होता रहेगा? सवाल ये भी है कि क्या कानून के पोरुष को चुनौती दी गई है? वो सारे साथी जो कहते हैं कि अपराधी को सजा मिलनी चाहिए और मिली, उनसे तो मैं सहमत हूं, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भी सहमत है, पर ये जान लीजिए कि इस सजा की आड़ में कई सफेद पोश, कई राजनेता, कई आला अफसर, कई चोलाधारी, कई बड़े-बड़े पदों पर बैठे लोग अपराधी की जुबान बंद कर अपने राज सदा के लिए दफन कर गए और इसीलिए इस बात पर हर भारतीय को गहन चिंता करने की आवश्यकता है।

एक अन्य प्रश्न पर कि एनकाउंटर से पहले ही काफी लोगों को शक था कि विकास दुबे का पहले ही एनकाउंटर हो जाएगा, क्या कहेंगे? श्री सुरजेवाला ने कहा कि यूपी में बनारस ले लेकर इलाहाबाद तक दो-दो सीनियर पुलिस के सुप्रिडेंट को माफियाओं और अपराधियों को पकड़ने पर किस प्रकार से उन्हें प्रताड़ित किया गया, ये पूरे देश ने देखा। उत्तर प्रदेश के एक एसएसपी ने तो चिट्ठी लिखकर ये कह दिया कि ट्रांसफर पोस्टिंग के लिए पैसे की इंडस्ट्री चल रही है। कल एक पुलिस अधिकारी ने जो ट्वीट किया कि विकास दुबे का एनकाउंटर हो जाएगा। अपने आप में चिंता का विषय है और एक पुलिस अधिकारी ने नहीं, अनेक पत्रकारों ने, कई समाज में जो चिन्हित प्रभुद्ध लोग हैं, उन्होंने कहा कि कहीं पिस्तौल छीनने की बात आएगी और इसका कल कहीं एनकाउंटर तो नहीं हो जाएगा और जब पुलिस अधिकारियों, लोगों, पत्रकारों के पूर्वानुमान बाद वही होता है और मीडिया कर्मियों को रोक लिया जाता है तो सरकार की विश्वसनीयता पर अपने आप में प्रश्न चिन्ह खड़ा होता जाता है कि क्या एक अपराधी जो मोहरा था, मोहरे को मार कर सरगनाओं को बचाया जा रहा है। सवाल सीधा मित्र एक प्रश्न, एक लाइन का यही है।

Sd/-
(Vineet Punia)
Secretary
Communication Deptt,
AICC